■ अभिभावक की कलम से

कैसा हो शिक्षक?

स्मृति कुलश्रेष्ठ

शिक्षा के विकास की दिशा को निर्धारित करने के लिए हमें सबसे अधिक शिक्षकों की गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। यह बेहद जरूरी है कि न सिर्फ हम शिक्षकों के चयन व प्रशिक्षण के समय सावधान रहें, बल्कि कार्य–अवधि के दौरान भी उनका मूल्यांकन होता रहे। और साथ ही एक बेहतर शिक्षक को वो अनुकूल वातावरण व सुविधाएं भी मिलें, जो शिक्षण के लिए आवश्यक हैं। शिक्षक की प्रयोगशीलता व स्वतंत्रता का भी सम्मान होना चाहिए। अफसोस की बात है कि हमारे अधिकांश सर्वेक्षण इस दिशा में हमारी विफलता को ही दर्शाते हैं, फिर चाहे वह सरकारी विद्यालयों की बात हो या गैर सरकारी की।

शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में शिक्षण के लिए निर्धारित शैक्षणिक योग्यता को अवश्य ही देखा जाता है और एक अच्छा शैक्षणिक रिकार्ड रखने वाले अभ्यर्थी को वरीयता भी दी जाती है, (अनेक गैर सरकारी विद्यालयों में यह नियम भी टूटता नजर आता है) जो कि सही भी है। परंतु यह भी हमेशा आवश्यक नहीं कि उच्च शैक्षणिक योग्यता रखने वाला व्यक्ति/शख्स, कक्षा में एक प्रभावशाली शिक्षक भी साबित हो। वह भी एक तयशुदा कार्यप्रणाली व निश्चित समय अवधि के भीतर। स्वयं को एक अच्छा अध्यापक सिद्ध करने के लिए शिक्षक का न केवल अपने विषय में पारंगत होने की आवश्यकता है, बल्कि साथ ही उसे रचनात्मक, नव–प्रवर्तक, सदैव उत्साहित व सबसे महत्त्वपूर्ण अपने काम से व छात्रों से स्नेह रखने वाला होना आवश्यक है। नयी परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना और समय की मांग को समझना एक अध्यापक का अनिवार्य गुण है। एक शिक्षक का अपने छात्रों की किसी भी प्रकार की आर्थिक, मानसिक व पारिवारिक स्थिति को संज्ञान में लेना व समझना भी बेहद जरूरी है। इन सभी गुणों, बल्कि कहा जाए कि रुचियों के सम्मिश्रण से ही एक उत्तम अध्यापक का उद्भव संभव है।

आज की सामाजिक विडंबना यह है कि हममें से अधिकांश अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार अपने कार्यक्षेत्र का चुनाव नहीं करते, बल्कि यह सोच कर करते हैं कि अमुक व्यवसाय/नौकरी द्वारा हम कितनी आर्थिक प्रगति कर सकते हैं। फिर चाहे उससे हम कितने ही असंतुष्ट रहें या हमारे कार्य से संबंधित अन्य लोग। यह कार्य अक्षमता असुरक्षा की भावना पैदा करता है। इसी असुरक्षा की भावना से बेइमानी और चापलूसी का जन्म होता है। स्वयं को अच्छा दिखाने व दूसरों को गिराने का प्रयास, कार्यक्षेत्र को एक राजनैतिक अखाड़े में परिवर्तित कर देता है। एक छ्दम वातावरण पैदा किया जाता है। और इन सबके नीचे निर्माण कहीं दब कर रह जाता है। शिक्षा का क्षेत्र भी एक अपवाद नहीं है। परंतु इसका प्रभावित होना बेहद घातक है। जो जहर यहां घुल रहा है वह धीरे–धीरे पूरे समाज में फैल रहा है। शिक्षक और अभिभावक का आचरण नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा होता है। यदि प्रेरणा ही दूषित हो जाए तो अनैतिकता के रोग को अनुवांशिक होने से रोका

जाना असंभव है। जो हमें पीढ़ी दर पीढ़ी कमजोर बनायेगा। इस दिशा में गहन चिंतन और उचित कदम उठाने की न केवल आवश्यकता है बल्कि यह हमारी प्राथमिकता होना चाहिए। बच्चों को नैतिकता का पाठ याद कराने से बेहतर होगा कि स्वयं को उनके आदर का विषय बनाया जाए।

बात नींव की ईंट की चली है, तो पुनः अपने मुख्य विषय शिक्षक व उसके साथ जुड़ी समस्याओं पर आना चाहूंगी। शिक्षक के चयन के समय इन सभी बातों का निर्धारण करना तो व्यवहारिक रूप से संभव नहीं है, परंतु प्रशिक्षण के दौरान इन गुणों के विकास पर अवश्य ही जोर देना चाहिए। परंतु व्यवस्था की सभी कमियों को यदि केवल शिक्षक के व्यक्तित्व से जोड़ा जाए और परिवर्तन की उम्मीद की जाए, तो यह अधूरा न्याय होगा। इसके अलावा उसे उपलब्ध कराए जाने वाले अकादमिक, प्रशासनिक व आर्थिक स्रोतों का योगदान भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। अपनी व्यवस्था की कई कमियों व उन कारणों को भी जानने की आवश्यकता है, जो एक शिक्षक की कक्षा में प्रभावशीलता में बाधक सिद्ध होती हैं।

मैं अभिभावक वर्ग से जुड़ी हूं। परंतु मुझे कुछ चीजें स्पष्ट समझ आती हैं। प्रथम यह कि शिक्षक की ऊर्जा अन्य कामों में खर्च होने से उसका शिक्षण पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। कक्षा में शिक्षक के प्रभाव को बनाए रखने के लिए शिक्षक व छात्रों का सही अनुपात तय होना अति आवश्यक लगता है। यदि हम चाहते हैं कि प्रति व्यक्ति शिक्षा का स्तर ऊंचा उठे तो बहुत जरूरी है कि योग्य अध्यापक की पहुंच कक्षा के सभी छात्रों तक हो। कक्षा में बैठने की व्यवस्था इस प्रकार हो, कि प्रत्येक छात्र, शिक्षक के हावभाव व क्रियाओं को भली–भांति समझ सके व साथ ही अध्यापक भी प्रत्येक विद्यार्थी की गतिविधि पर नजर रख सके। अक्सर एक ही कक्षा में शिक्षक को भिन्न–भिन्न मानसिक स्तर के बच्चों को पढ़ाना पड़ता है। देखने



में यह साधारण सी बात लगती है। इस विषमता को संभालना शिक्षक के सामर्थ्य के अंदर माना जाता है। परन्तु व्यावहारिक सीमा में रहकर ही किसी समस्या को हल किया जा सकता है। यदि असमानता का स्तर अधिक हो तो सामंजस्य लाना मुश्किल ही होगा। यदि कक्षा 5 के विद्यार्थी की समझ, कक्षा 2 जितनी ही हो, तो फिर शिक्षक के लिए क्या दिशा–निर्देश होने चाहिए। या तो वह उन पिछड़े हुए बच्चों को अनदेखा कर, कक्षा के स्तर के अनुसार बाकी बच्चों को पढ़ाए। या फिर पूरी कक्षा का स्तर वहां रखे जहां सभी बच्चों को लाना संभव हो सके। कठिन स्थितियों में यह सवाल शिक्षक पर ही उठाया जाता है। वर्तमान नियमों के अंतर्गत किसी विद्यार्थी को अनुत्तीर्ण करना संभव नहीं है। अधूरे ज्ञान के साथ नई कक्षा में जाने वाले यह बच्चे शिक्षकों के लिए एक बड़ी चुनौती हैं। इस प्रकार सभी बच्चों को उत्तीर्ण करने के लिए पाठ्यक्रम प्रबंधन की एक नीति है। यह स्थिति शिक्षा का एक भ्रमित रास्ता प्रदर्शित करती हैं और इस प्रकार शिक्षक के कार्य को कृत्रिम रूप से कठिन कर दिया जाता है। साथ ही यह उन बच्चों के लिए भी अच्छा नहीं है जो कि अपने जीवन की इमारत को एक कच्ची नींव पर रखने जा रहे हैं। यह तो नहीं कहूंगी कि किसी बच्चे को अनुतीर्ण कर हतोत्साहित किया जाए, परंतु कक्षा में छात्रों का प्रवेश सिर्फ उनकी उम्र व ग्रेड के आधार पर न हो कर उनकी समझ के आधार पर हो। इस प्रकार शिक्षक अपनी क्षमता का पूरी ऊर्जा के साथ प्रयोग कर अच्छा परिणाम दे पाएगा। साथ ही बच्चों का भी दबाव रहित विकास संभव हो पाएगा।

यद्यपि अन्य रोजगार क्षेत्रों की अपेक्षा चूंकि शिक्षा का क्षेत्र अधिक सुविधाजनक समझा जाता है, इसलिए अध्यापक पद के लिए आवेदकों की सूची काफी लम्बी रहती है। फिर भी स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभाशाली आवेदक कम ही आ पाते हैं। इसका एक कारण आकर्षक वेतन न होना समझा जाता है। दूसरा, यहां उन के स्वयं के विकास की संभावनाएं भी कम ही होती हैं। कुछ लोग जो इस व्यवसाय में अपने आदर्शों के साथ हैं भी और एक साकारात्मक बदलाव के लिए प्रयत्नरत हैं। उन्हें प्रशासनिक सहयोग कम ही मिल पाता है। ऐसे में वे समझौतावादी व्यवस्था में घुट कर रह रहे हैं। यह एक संकट की स्थिति है। हम सब को इस दिशा में सोचने की आवश्यकता है। शिक्षित देश का सपना चंद लोगों का ही सपना नहीं होना चाहिए। हम सब का सम्मिलित प्रयास ही शिक्षा की दशा को संभाल सकता है। अतः शिक्षण व्यवस्था को इस प्रकार बनाना कि वह उसमें रुचि रखने वाले योग्य लोगों को रोजगार के लिए आकर्षित कर सके और यह शिक्षाविदों की प्राथमिकता होनी चाहिए।

स्मृति कुलश्रेष्ठ : बी.ए. कर रखा है तथा गृहणी हैं।